3. बाणभट्ट की आत्मकथा की भाषा में [illegible] की प्रचुरता है।

6.2 'बाणभट्ट की आत्मकथा' : प्रमुख चरित्र (बाणभट्ट)

बाणभट्ट की आत्मकथा का केंद्रीय चरित्र 'बाणभट्ट' ही है। वह संपूर्ण उपन्यास का केंद्रबिंदु है, प्रधान पात्र है तथा उपन्यास के नायक पद का अधिकारी है। बाण का वास्तविक नाम 'दक्ष' था तथा वह प्रसिद्ध पंडित वात्स्यायन वंशी जयंत भट्ट का पौत्र था। अल्पायु में ही वह मातृसुख से वंचित हो गया और चौदह वर्ष की अवस्था में पितृस्नेह से भी वंचित हो गया।

Scanned by CamScanner

बाणभट्ट अस्थिर चित्त व्यक्ति था, अतः किसी कार्य की योजना पहले से नहीं बनाता था। वस्तुतः किसी बंधन में बंधना उसे कभी अच्छा नहीं लगा किंतु जब भी कोई साहस का काम उसे करना होता, वह पूरी योग्यता एवं दायित्व से उस कार्य को पूर्ण करता। भट्टिनी की मुक्ति एवं रक्षा के दायित्व का निर्वहन वह बड़ी कुशलता से करता है।

बाण कवि हृदय होने से सौंदर्योपासक था। उसका सौंदर्य बोध अत्यंत गंभीर एवं गहन था। निपुणिका की आँखें और अँगुलियाँ उसे बहुत आकर्षक लगती थीं। वह इस विषय में अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त करता है, **"निपुणिका बहुत अधिक सुंदर नहीं थी। उसका रंग अवश्य शेफालिका के कुसुमनाल के रंग से मिलता था परंतु उसकी सबसे बड़ी चारुता संपत्ति उसकी आँखें और अंगुलियाँ ही थीं। अंगुलियों को मैं बहुत महत्त्वपूर्ण सौंदर्योपादान समझता हूँ। नटी की प्रणामांजलि और पताक मुद्राओं को सफल बनाने में पतली छरहरी अंगुलियाँ अद्भुत प्रभाव डालती हैं।"**

बाणभट्ट स्त्री जाति के प्रति सम्मान का भाव रखता है। वह नारी सौंदर्य का प्रशंसक तो है किंतु उसकी दृष्टि में कलुष रंचमात्र नहीं है। भट्टिनी के सौंदर्य से अभिभूत बाणभट्ट को उसके सौंदर्य में परमात्मा के सौंदर्य की झलक दिखाई देती है, **"भट्टिनी के चारों ओर एक अनुभाव राशि लहरा रही थी। मैं थोड़ी देर तक उस शोभा को देखता रहा। मन ही मन मैंने सोचा कि कैसा आश्चर्य है? विधाता का कैसा रूप विधान है?"**

सौंदर्य प्रेमी बाण नारी की पवित्रता, गरिमा को विशेष महत्त्व देता है। नारी शरीर को देव मंदिर की भांति पवित्र समझने वाला बाण इस विषय में अपने विचार व्यक्त करता हुआ कहता है, **"मैं नारी सौंदर्य को संसार की सबसे अधिक प्रभावोत्पादिनी शक्ति मानता रहा हूँ। .....नारी सौंदर्य पूज्य है, वह देव प्रतिमा है।"**

निपुणिका और भट्टिनी दोनों ही बाण से प्रेम करती हैं। निपुणिका की दृष्टि में तो बाण देवतुल्य है। वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हुई बाण से कहती है, **"देखो भट्ट, तुम नहीं जानते कि तुमने मेरे इस पाप पंकिल शरीर में कैसा प्रफुल्ल शतदल खिला रखा है। तुम मेरे देवता हो, मैं तुम्हारा नाम जपने वाली अधम नारी हूँ।"**

बाणभट्ट अनेक विधाओं एवं कलाओं में पारंगत तो है ही, साथ ही वह सहृदय, उदार, धैर्यवान, कष्टसहिष्णु एवं अत्यंत मेधावी भी है। निराहार रहने की साधना में वह सिद्ध है। वह वीर, साहसी एवं प्रणपालक भी है। न तो वह मिथ्याचारी है और न ही अनर्गल वार्तालाप करता है। उसका विनोदी स्वभाव, स्वाभिमानी वृत्ति उसे चरित्र की ऊँचाइयों पर अवस्थित करती हैं। निश्चय ही बाण के चरित्र के विषय में जो प्रवाद संस्कृत साहित्य में परंपरा से व्याप्त रहा है, उसका खंडन कर बाण को एक सच्चरित्र एवं उदार मानव के रूप में प्रतिष्ठित करने में द्विवेदी जी को सफलता मिली है।

बाण की प्रशंसा निपुणिका एवं भट्टिनी दोनों करती हैं। निपुणिका से तो बाण मित्रवत व्यवहार करता है किंतु भट्टिनी के प्रति वह भक्तिभाव रखता है। उन दोनों के प्रति बाण के मन में जो भावगत अंतर है उसे स्पष्ट करते हुए वह कहता है, **"निपुणिका से मैं खुलकर बातें कर सकता हूँ, भट्टिनी के सामने मुझमें एक प्रकार की मोहनकारी जड़िमा आ जाती है।"** वह भट्टिनी के रूप पर मुग्ध होकर उसे बस देखता ही रह जाता है किंतु उसकी दृष्टि में वासना का कलुष रंचमात्र भी नहीं है। बाण निपुणिका के सेवाभाव से प्रभावित है। भट्टिनी को पहली बार जब बाण ने देखा तो उसकी अतुलित रूपराशि को देखकर उसके मुख से ये शब्द निकल पड़े, **"इतनी पवित्र रूप राशि किस प्रकार इस कलुष धरित्री में संभव हुई।"** भट्टिनी भट्ट को अपना अभिभावक मानती है और उसका बहुत सम्मान करती है।

नोट्स

बचपन से ही बाण आवारा, घुमक्कड़, अस्थिर चित्त था। नगर-नगर, जनपद-जनपद में मारा-मारा फिरता था इसीलिए उसे 'बंड' कहते थे। वह एक स्थान पर कभी टिक नहीं सका। यही नहीं उसने कभी नाट्य अभिनय को अपनी जीविका बनाया तो कभी कठपुतलियों के खेल को, कभी पुराण वाचन से कुछ उपार्जित किया तो कभी नट कर्म से लोगों का मनोरंजन किया।

Scanned by CamScanner

समग्रत: यह कहा जा सकता है कि 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में बाणभट्ट ही लेखक का प्रिय पात्र रहा है। उसकी पूरी सहानुभूति भी बाण को ही मिली है। बाण के चरित्र के विविध पक्षों को उजागर करने वाली घटनाओं को उपन्यासकार ने इसमें स्थान दिया है। उसकी उदात्त प्रवृत्तियाँ निश्चय ही पाठकों को प्रभावित करती हैं। नारी के प्रति उसकी दृष्टि निश्चय ही प्रशंसनीय है। निपुणिका तो यह स्वीकार भी करती है कि भट्ट के संपर्क में आने से ही वह अपने को हाड़-माँस की गठरी से कुछ अधिक समझने लगी। निश्चय ही बाणभट्ट के चरित्र को उदात्त मूल्यों से संपृक्त कर द्विवेदी जी ने उसके परंपरागत लांछित चरित्र को नए आयाम देकर उसका पवित्र प्राक्षालन कर दिया है।

Scanned by CamScanner